पंजाबी लोक संगीत का उद्‌गम एवं विकास

Dr.Amanpreet Kaur Kang
Astt.Professor Dept. of Music, G.G.S Khalsa College For Women, Jhar Sahib(Ludhiana)Pb.

लोक शब्द का सम्बन्ध पाश्चात्य संस्कृति में असंस्कृत एवं अशिक्षित समाज से माना गया है जबकि असंस्कृत और अशिक्षित व्यक्ति द्वारा निर्मित कला स्वाभाविक एवम् प्राकृतिक होती है। यही अन्तर शिष्ट कला ओर लोककला में है। शिक्षित और सुसंस्कृत व्यक्ति के द्वारा निर्मित कला में उनकी इच्छा न रहते हुए भी उनकी शिक्षा ओर संस्कृति का प्रभाव निर्मित कला पर आ जाता है। जबकि असंस्कृत और अशिक्षित व्यक्ति द्वारा निर्मित कला स्वाभाविक एवम् प्राकृतिक होती है। यही अन्तर शिष्ट कला ओर लोककला अथवा Classical Art or Folk Art में है। इस प्रकार थ्वसा शब्द का भाव ग्राम, प्रदेश के उन सभी व्यक्तियों का बोधक है जिनसे वह समुदाय बना है।

'ऐलन डंडीज़' का कथ्न है कि कोई भी समुह जिसमें दो से अधिक व्यक्ति हों ओर जिनमें, भाषा, व्यवसाय या धन आदि की समानता हो उन्हें एक समूह भावना में बाँध कर रखे, वही समूह लोक कहलाया जा सकता है। यह समूह शहरी लोगों का भी हो सकता है, ग्रामीणों का भी, शिक्षित बुद्धिजीवियों का भी और निरक्षरों का भी, अमीरों का भी और गरीबों का भी।

वह संगीत जो साधारण लोगों द्वारा रचित हो और जिसे सीख कर फिर प्रयोग में लाना आसान हो वह लोक संगीत कहलाता है। पंजाबी लोक संगीत बहुत प्राचीन है। भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में पंजाबी लोगों के मन में विभिन्न प्रकार के भाव उत्पन्न होते रहे जिन्हे प्रकट करने के लिए उनके मुख से शब्द निकलते रहे किन्तु यह शब्द संगीतमय स्वरावलियों में निबद्ध हो कर निकले और गीत एवं संगीत के इस मिश्रण को लोक संगीत कहा गया।

पंजाबी लोक काव्य क्षेत्र के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. नाहर सिंह के अनुसार प्रसिद्ध लोकधारा विज्ञानी अलैगजांदर केप (Elexander Haggerty Krappe, The Science of Folklore, P-153) लोक गीत को सुरीले स्वर वाला ऐसा सरोदमय काव्य मानता है जो अनपढ़ लोगों में गुमनाम रचना के तौर पर भूतकाल से ही प्रचलित हो गया है और जो

काफी समय के लिए रह सकता है। कई बार लोगों में निरन्तर प्रचलित रहता है। इस प्रकार लोक गीत हम उस रचना को मानते हैं जो मौखिक परम्परा या लोक कण्ठ द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे चलता रहता है और जिसे एक से ज्यादा कितने ही लोक पीढ़ियों तक गाते चले जाते है और धीरे–धीरे इसके रचयता का नाम लुप्त हो जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से रचयता गौण हो जाता है और उसका गीत सामूहिक बन जाता है। ऐसे गीत धीरे–धीरे समाज की परम्परा का अंग बन जाते हैं और फिर इन गीतों में उस समाज का अक्स स्पष्ट दिखाई देने लगता है। इसी कारण किसी कवि ने कहा है कि अगर किसी कौम का मुल्यांकन करना हो तो उसके लोक गीतों को देखो और अगर किसी कौम को तबाह करना हो तो उससे उसके लोक गीत छीन लो।

वास्तव में यह गीत व्यक्ति के बाह्य जीवन के साथ–साथ उसके मानसिक भावों के परिचायक भी होते हैं, परन्तु उनमें सूक्षमता की अपेक्षा स्थूलता और स्पष्टता को अधिक महत्त्व दिया जाता है। लोक संगीत संक्षिप्त, सरल, स्पष्ट, स्वभाविक, सुन्दर, अनुभूतिमय और संगीतमय होता है।

पंजाब के पारम्परिक लोक गीत पंजाबी लोक साहित्य का प्रमुख अंग हैं। पंजाब का लोक जीवन इनमें से स्पष्ट दिखाई देता है। इन गीतों में इतनी विभिन्नता है कि शायद ही जिन्दगी का कोई ऐसा पक्ष हो जिसकी झलक इनमें से दिखाई न देती हो। पंजाब के लोक गीतों की भाषा आधुनिक पंजाबी भाषा से भिन्न नहीं है परन्तु क्योंकि कुछ किलोमीटर की दूरी पर भाषा में अन्तर आ जाता है, इस कारण एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक जाते–जाते कुछ शब्दों के प्रयोग में अन्तर स्पष्ट नज़र आता है। इन्हीं शब्दों के प्रयोग से हमे पता चलता है कि कोई लोक गीत कौन सी उपभाषा (मलवई, दुआबी, माझी, मुलतानी, पोठोहारी, पुआधी) में रचा गया है।

लोक गीतों की कल्पना लोक संगीत के बिना नहीं की जा सकती। लोक गीतों को संगीत से पृथक करके नहीं देखा जा सकता। यह दोनों एक दूसरे के साथ ही जन्म लेते हैं। इस कारण लोक संगीत भी जाति के चरित्र के साथ एक सुर हुआ होता है। ये किसी व्यक्ति विशेष के निजी मनोभावों की अभिव्यक्ति न होकर समूची जाति के भावों की अभिव्यक्ति होता है। इस प्रकार पंजाबी लोक संगीत भी पंजाबियों के जन जीवन पर आधारित है। ये संगीत वास्तव में माझा, मालवा, दोआबा, पोठोहार, मुल्तान आदि पंजाब

के विभिन्न क्षेत्रों की लोक संगीत परम्परा का समूह है। इन सभी क्षेत्रों के लोक संगीत में अन्दाज और अंगों की भिन्नता है जिसका सम्मिलित रूप ही पंजाबी लोक संगीत है।

लोक संगीत की सामान्य विशेषताओं के अतिरिक्त पंजाबी लोक संगीत की अपनी विशेषताएं भी हैं। पंजाबी लोक संगीत में स्त्री और पुरूषों के गीतों के गायन में, इनके स्वभाव के अनुरूप भिन्नता है। स्त्रियों के गीतों में ज़्यादा मिठास, करूणा, वेग है। पुरूषों के गीतों में इसके विपरीत कड़कपन, खुलापन, हूक और जोश आदि लक्षण विद्यमान है। पुरूष गायक अपनी गायकी के लिए आमतौर पर तूंबी, इकतारा, बुघदू, सारंगी, अलगोज़े आदि साज़ों का प्रयोग करते हैं। स्त्रियां आमतौर पर ढोलकी, और घड़े पर चम्मच या छल्ला या ठीकरी की ठोकर से ही सारे गीत गा लेती हैं। स्त्रियों के अधिक गीत अनिबद्ध हैं।

निबद्ध गीतों में ताल और साज द्वारा मध्यवर्ती अंतरालों को भरा जाता है जबकि अनिबद्ध पंजाबी गायकी में इनकी भरपाई के लिए आवाज़ का विलम्ब, आलाप, मींड और मुर्की आदि का प्रयोग किया जाता है। पंजाबी लोक संगीत में बुलंद आवाज़ की परम्परा है। इसी कारण लगभग सारे ही लोक गीतों में हारमोनियम आदि के चौथे या पांचवें स्वर को ही आधार माना जाता है। नाद में खुलापन और सुरीलापन है। इस के इलावा मींड, खटका, मुर्की आदि से रसिक स्वरावलियों को स्पष्ट रूप में प्रकट किया जाता है। पंजाबी लोक संगीत ने उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास में बाकी क्षेत्रिय संगीत परम्परा से कहीं ज्यादा योगदान दिया है। इसने इस संगीत को धुनों के रूप में रागों के लिए विशेष आधार प्रदान किये हैं। संगीत शास्त्र की दृष्टि से इन्हें देसी राग भी कहा जाता है। पहाड़ी, मुलतानी, आसा, मांझ, वडहंस, काफ़ी, मारू, तिलंग, राग पंजाबी लोक धुनों से विकसित हुए हैं।

इस संगीत का एक बड़ा महत्त्वपूर्ण लक्षण भावुकता है जो पंजाबियों के स्वभाव से मेल खाती है। ये लोग भावुक, स्पष्ट और सादा तबीयत वाले है। इसी कारण पंजाब के लोक संगीत में मनोभावों को तीव्रता से व्यक्त किया जाता है। इस के अतिरिक्त पंजाबी लोक संगीत में लचकीलापन बहुत है। हर एक गायक इसे अपनी प्रतिभा के अनुसार ढाल कर गा सकता है।

इस प्रकार पंजाबी पारम्परिक गीत सदियों से लोक काव्य की विभिन्न विधाओं के रुप में भाव अभिव्यक्ति व मनोरंजन का स्त्रोत रहे हैं व भविष्य में भी रहेंगे। इन गीतों

की एक विशाल सूची है जिन्हें आयुवाची (संस्कार संबंधी) कालवाची, एतिहासिक, धार्मिक व स्फुट लोक गीतों में वगीकृत किया गया है। उदाहरणतः लोरिया, घोड़िया, सुहाग, सिट्ठणीया, टप्पा, माहिया, ढोला, बोलियां, जुगनी, सस्सी पुन्नु, मिर्जा–साहिबाँ, हीर, छल्ला आदि ।

डॉ. रीता धनकर हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परम्परा, पृष्ठ–20
डॉ. नाहर सिंह, लोक–कावि दी सिरजन प्रक्रिया, पृष्ठ–63
डा. नाहर सिंह, श्लोक–कावि दी सिरजन प्रक्रिया,, पृष्ठ–70
डॉ. मनोरमा शर्मा, लोक मानस के सुरीले स्वर, पृष्ठ–10
बलबीर सिंह पूनी, लोकधारा अध्ययन, (सम्पादक), बलबीर सिंह पूनी, पृष्ठ–150
डॉ. गुरनाम सिंह, पंजाबी लोक संगीत, पृष्ठ–76, 77